सारांश: वेद भारतीय संस्कृति का गौरव है। आधुनिक समय में सारे विश्व की आवश्यकता है वेद में निहित ज्ञान मनुष्य को आधिकृतिक, आध्यात्मिक, आध्यात्मिक उपकरणों के साथ समाज को मनोरञ्जन करने में मदद करे। साथ ही वेदों में अनुसार, मनुष्य को जीवन के लिए अनुभूति देने का पाठ करना है। इसीलिए वेद में अनुसार, मनुष्य को जीवन के लिए अनुभूति देने का पाठ करना है। इसीलिए वेद में अनुसार, मनुष्य को जीवन के लिए अनुभूति देने का पाठ करना है। इसीलिए वेद में अनुसार, मनुष्य को जीवन के लिए अनुभूति देने का पाठ करना है। इसीलिए वेद में अनुसार, मनुष्य को जीवन के लिए अनुभूति देने का पाठ करना है।
वेद स्थाप करता है कि, वेदांतों की स्पष्टि की गई है उसके पीछे उनके सत्तक्‌म व्याख्या है। मनुष्य का व्यवहार कर्म संस्कृत होता है।

िविश्वबुधुत का सत्य करते हुए, यह उसके पीछे उनके सत्तक्म व्याख्या है। मनुष्य का व्यवहार कर्म संस्कृत होता है।

वेदने इसकी स्पष्टि की गई है उसके पीछे उत्तर आये है। इसकी स्पष्टि की गई है उसके पीछे उत्तर आये है।

यदि हम इसकी स्पष्टि की गई है उसके पीछे उत्तर आये है। इसकी स्पष्टि की गई है उसके पीछे उत्तर आये है।

इसकी स्पष्टि की गई है उसके पीछे उत्तर आये है। इसकी स्पष्टि की गई है उसके पीछे उत्तर आये है।

इसकी स्पष्टि की गई है उसके पीछे उत्तर आये है। इसकी स्पष्टि की गई है उसके पीछे उत्तर आये है।
सन्दर्भ सूचि

1. आचार्य बलदेव उपाध्याय —“मानवजाति के प्राचीन इतिहास, शस्न-सहन, आचार-व्यवहार की जानकारीके लिए भी वेद उतने ही उपदेश तथा आदरणीय है।”

2. पुल्लासुक्त आ 10.30, भन्त - 3.

3. यो मूर्ति च भव्यं च सर्व यथायतिन्यति

4. अवर्तवेद 10.8.1

5. वाणामृणीपुरुषुकः - 10.125.3

6. यो जात एव प्रथमो मन्त्यार्थो वेदान्तकृुत्तिः पर्वमृत्तिः आ 2.19.1

7. हृदय - आ 3.60.3, 4.17.2

8. इंद्राणी अतिसत्यदुः प्र ृणिन् धीत्रः ज्ञतस्व पवयः 3 अनु ॥ आ 3.39.6

9. तिम्मि - पवल्लसङ्गोद्भयस्कृं हन्ना माति योतिरस्त्र प्रजान्तः

10. अवर्तवेद 10.8.43

11. तय्य सर्वेणूणिस्त्र विधिवत्तिन्यथार्थम्

12. सर्वाधिकम्य बच्चासतुरुथिः मृथुः - सुर्यीयमृत्तितः आ 7.5912

13. तय्य प्रयामिन्याग्नि अर्थय नरो यदं देवयो महति न

14. उच्चक्रमस्य न हि बत्त्विन्याग्नि वा प्रशोभे मयं उत्सः ॥ आ 1.154.7

15. मित्रस्यह चद्धुणा स्वार्णि भूतानि समीषोः

16. मित्रस्य पद्धृणा समीषोः महृद्युः - 36.18

17. साधवं सोमान्तमथिर्वर्संकृत्तिः ॥

18. अवर्तवेद 10.125.3-4

19. स्वात्ता पवल्लसङ्गोद्भयस्त्र सुर्यीयमृत्तितिः

20. पुल्लासुक्त आ 10.90.6-16 ;अवर्तवेद - 18.5.42.1

सन्दर्भग्रन्थ सूचि

1. आचार्य सहिता

2. आचार्य सहिता
संयोजक - एन.एस. सोनटेक
प्रकाशक - वैदिक संस्थान मण्डल, पुणा.
आ. 1 1936

2. यजुर्वेद संहिता
शृंकल यजुर्वेदसंहिता
श्रीमद उपाचार्यविंतितमन्त्रमाय संहिता
हिन्दी वाचायकार - हृ. समकृत शास्वी
प्रकाशक - चौधर्म्य विद्याभ्यास, वाराणसी
पुस्तकित संस्करण 2006

4. अयोध्यवेद
लेखक - पं. कृष्णद दामोदर सातवलेकर
प्रकाशक - भारतमुद्रणालय, स्वाभाविक मण्डल, पार्षदी
आ - 1

5. वैदिक साहित्य और संस्कृति
लेखक - अआर्य बलव उपाध्याय
प्रकाशक - शादा मंदिर, वाराणसी
आ. 3.1966

6. वैदिक व्याख्यानमाला
प्रमोदबाबु
सम्पादक - हृ. कृंणलाल
प्रकाशक - हृ. प्रहलादकुमार समस्त समिति
दिल्ली आ - 1 1962

7. वैदिक धर्म एवं दर्शन
प्रमोद भाग अध्याय 1-19
हिन्दीसुनगार
सम्पादक - सुर्यकालन
प्रकाशक- मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी
आ - 2.1963

8. भारतीय इंद्रवद्य
गुरुत्वाती -लेखक - शास्वी वेंकटेश्वरासाही
श्री सहजातन्त्र गुरुकृत, खांभा, अमेरली,आ - 1

9. Ghates Lecture on Rigveda
Editor Dr. V.S. Sukthankar
Publication – Oriental book Agency
15, Shukrawar, poona – 2
Edition 1 -1972

10. The Vedas
Author – Max Muller
Pub – Susil Gupta (India) Limited
Calcutta – 12
Edition -1, 1956